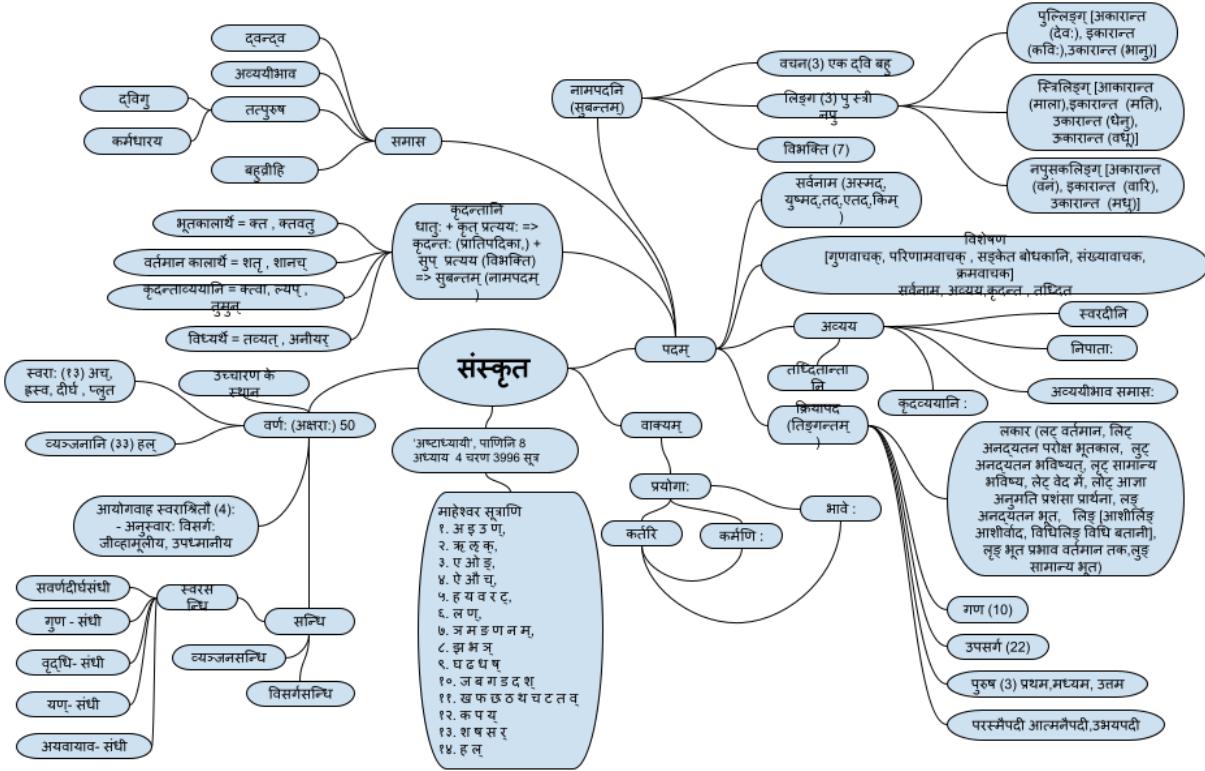


Learning Sanskrit Yogesh

Just ontologies, no actual tables, lay of the land doc



Introduction

संस्कृत व्याकरणाचा प्रमुख आधार, पाणिनी रचित 'अष्टाध्यायी'. त्यात ८ अध्याय, प्रत्येकात ४ चरण, असे ३२ चरण आहेत. एकूण ३९९६ सूत्र आहेत.

त्रिमुनी: पाणिनी (अष्टाध्यायी), कात्यायन(वार्तिक), पतंजली (महाभाष्य)

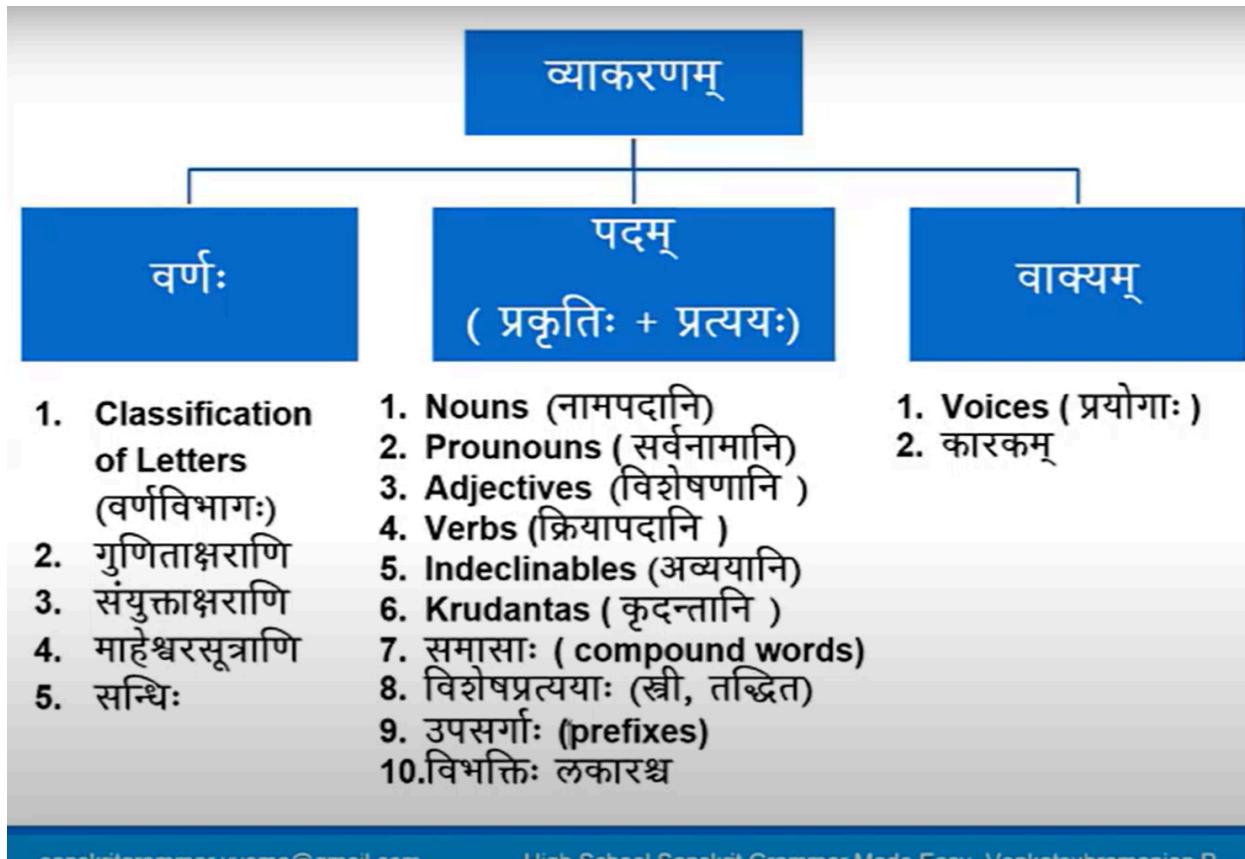
'लघु सिद्धांत कौमदी' अष्टाध्यायीवर आधारित आहे.

भट्टोजी दीक्षित : सिद्धांत कौमदी

वरदराजाचार्य: लघु/मध्य/सार/ सिद्धांत कौमदी.

Primary References

- [High School Sanskrit Vyoma](#)
- [Digital Sanskrit BORI](#)



उच्चारण के स्थान

संस्कृत अक्षराः/वर्णाः

- स्वराः (१३) अच् - अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ऋ, लृ ए, ऐ, ओ, औ
 - व्यञ्जनानि (३३) हल् - क् ख् श् ष् स् ह्
 - आयोगवाह स्वराश्रितौ (४): - अनुस्वारः विसर्गः जीव्हामूलीय (':' + क /ख|अंतःकरण), उपधमानीय (':+प/फ| गुरोः परम)
- एकूण ५० वर्ण आहेत.

स्वराः

‘स्वयं राजन्ते इति स्वरः’

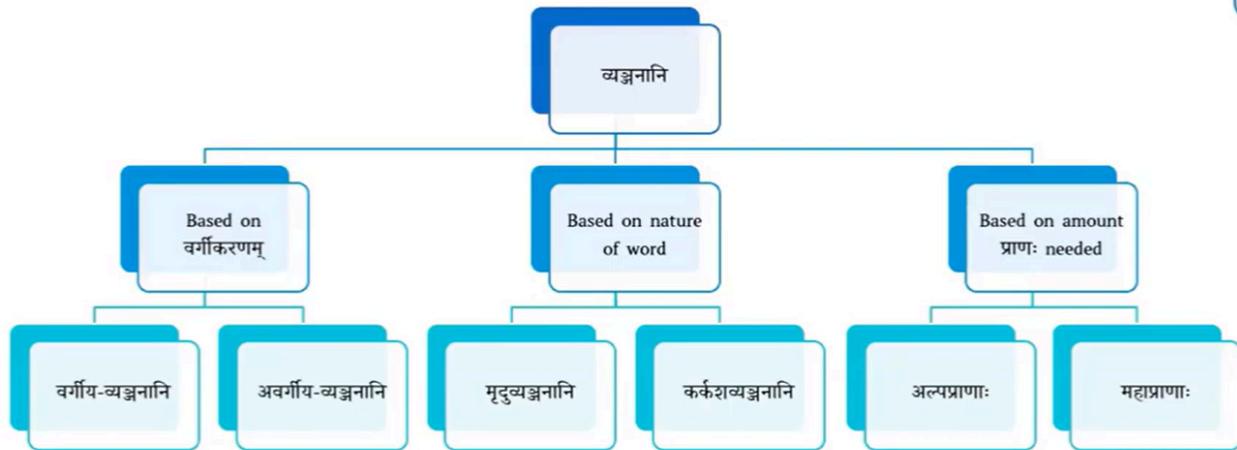
हस्व स्वर (उच्चारण में एक मात्रा का समय) - अ, इ, उ, ऊ, ल

दीर्घ स्वर (उच्चारण में दो मात्रा का समय) - आ, ई, ऊ, ऋ (लु स्वर का दीर्घ रूप नहीं होता) ए, ऐ, ओ तथा औ

प्लुत स्वर (उच्चारण में तीन मात्राओं का समय) - ओउम् में 'ओ' प्लुत स्वर है

व्यञ्जनानि

‘व्यजते वर्णान्तर संयोगेन द्योतते ध्वनिविषेषो येन तद् व्यञ्जनम्’



कवर्ग (कण्ठ)- क ख ग घ ङ

चवर्ग (तालु) - च छ ज झ ञ

टवर्ग (मूर्धा) - ट ठ ड ढ ण

तवर्ग (दन्त) - त थ द ध न

पवर्ग (ओष्ठ)- प फ ब भ म

अवर्गीय

- अन्तःस्थ वर्ण- य र ल व
- ऊष्म वर्ण - श(like च), ष (ट), स(त), ह
- 'ळ' not there except in Vedas.

संयुक्त वर्णद्वयम् -

क् + ष् + अ = क्ष

ज् + झ + अ = झ

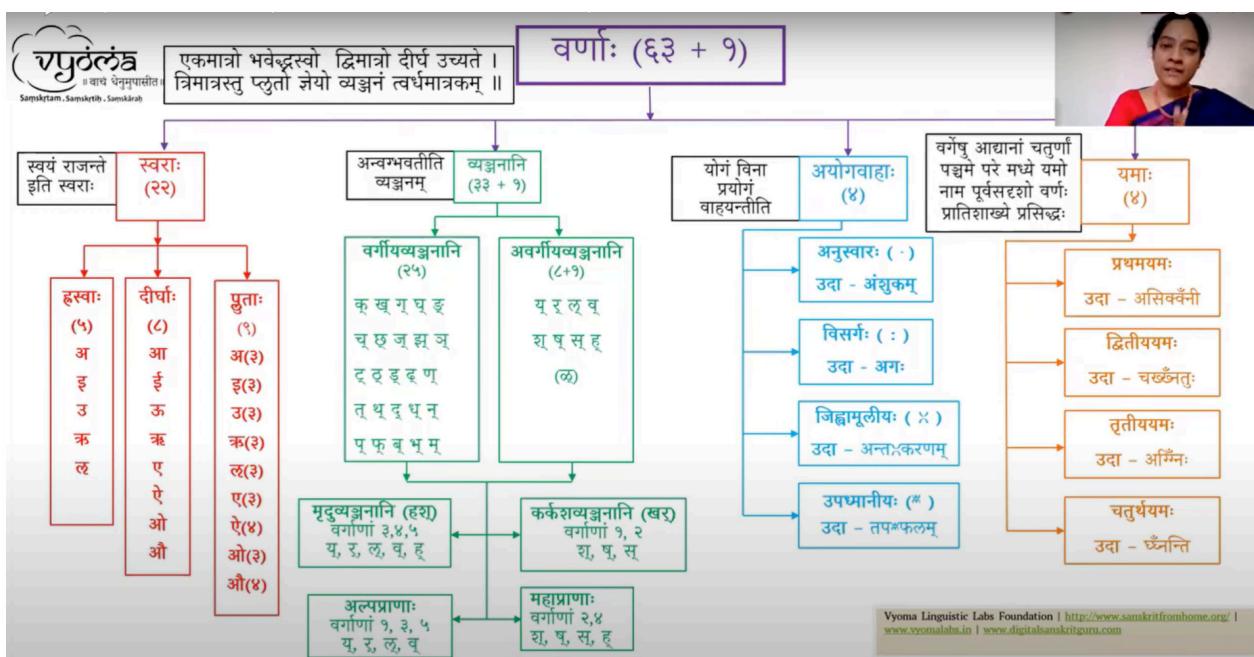
त् + र = त्र

श् + र = श्र

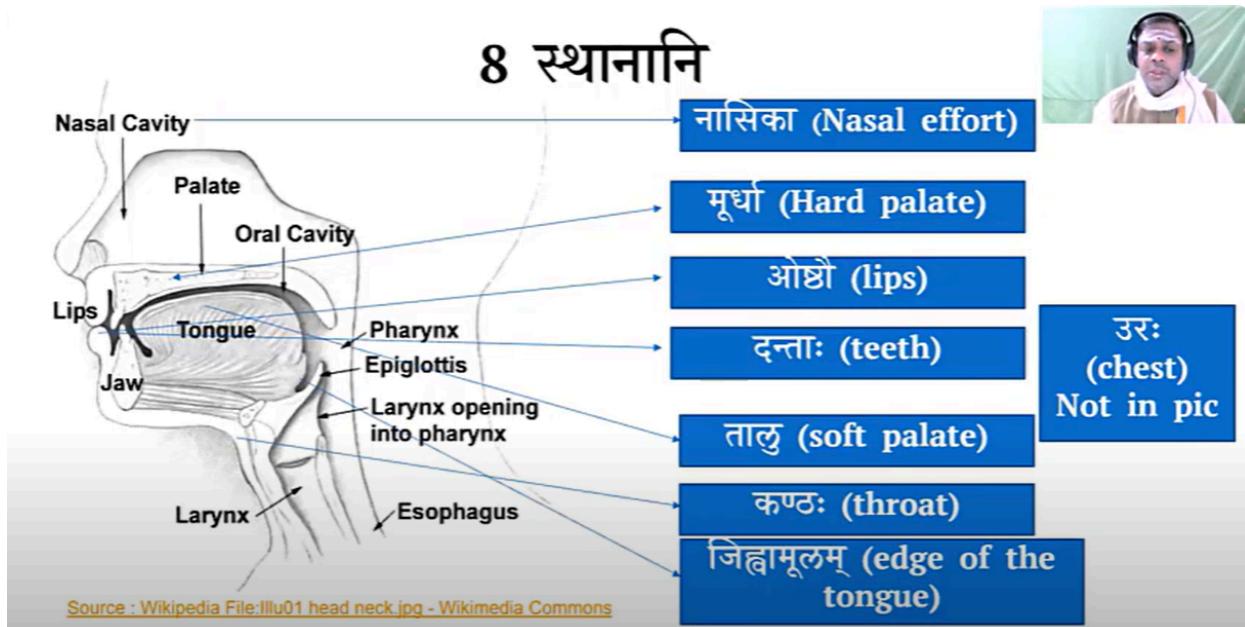


sanskritgrammar.vyoma@gmail.com

High School Sanskrit Grammar Made Easy- Venkatsubramanian P



उच्चारणस्थानानि



1. कण्ठ-अ, आ, कवकीय वर्ण (क्, ख्, ग्, घ्, ङ्), ह, विसर्ग(ঁ:)।
 2. ताल- इ, ई, चवर्णीय वर्ण (च्, छ्, ज्, झ্, ज), यू, श।
 3. मूर्धा- ऋ ऋ टवर्गीय वर्ण (ट्, ठ्, ड্, ଣ), ଟ, ଷ।
 4. दन्त-ଲୁ, तवर्गीय वर्ण (ତ୍, ପ୍, ଦ୍, ନ୍)। [ଲୁ, ସ୍]।
 5. ओष्ठ- ତ, ଊ, पठगय वर्ण (ପୂ, ଫୁ, ମୁ, ମୁ)।
- ए, ऐ का उच्चारणस्थान-कण्ठतातु
 ओ, औ का उच्चारणस्थान-कण्ठोष्ठ
 व् का उच्चारणस्थान-दन्तोष्ठ

वर्णों का उच्चारण स्थान

स्थान	स्वर	व्यंजन	अन्तस्थ	उष्म
1. कण्ठ	अ, आ	क, ख, ग, घ, ङ्	-	ह, अः
2. तालु	इ, ई	च, छ, ज, झ, झ्र	य	श
3. मूर्द्धा	ऋ, ॠ	ट, ठ, ड, ढ, ण	र	ष
4. दन्त	लृ	त, थ, द, ध, न	ल	स
5. ओष्ठ	उ, ऊ	प, फ, ब, भ, म	-	-
6. नासिका	-	अं, इं, ऊं, ण, न्, म्	-	-
7. कण्ठतालु	ए, ऐ	-	-	-
8. कण्ठोष्ठ	ओ, औ	-	-	-
9. दन्तोष्ठ	-	-	व	-

घोष-अघोष, अल्पप्राण-महाप्राण तालिका

स्थान	अघोष		घोष		अघोष		घोष	
	अल्पप्राण	महाप्राण	अल्पप्राण	महाप्राण	अल्पप्राण	महाप्राण	अल्पप्राण	
कण्ठ	क	ख	ग	घ	ङ्	-	-	-
तालु	च	छ	ज	झ	ञ	श	य	
मूर्द्धा	ट	ठ	ड	ढ	ण	ष	र	
दन्त	त	थ	द	ध	ন	স	ল	
ओष्ठ	প	ফ	ব	ভ	ম	-	-	
-	-	-	-	-	ঁ	:	-	

(Ref <https://mycoaching.in/sanskrit-varnmala>)

माहेश्वर सुत्राणि

१. अ इ उ ण्,
२. ॠ लृ कृ,
३. ए ओ ङ्,
४. ऐ औ च্,

५. ह य व र ट्,
६. ल ण्,
७. ज म ड ण न म्,
८. झ भ ज्
९. घ ढ ध ष्
१०. ज ब ग ड द श्
११. ख फ छ ठ थ च ट त व्
१२. क प य्
१३. श ष स र्
१४. ह ल्

उदाहरण: अच् = प्रथम माहेश्वर सूत्र 'अइउण्' के आदि वर्ण 'अ' को चतुर्थ सूत्र 'ऐओच्' के अन्तिम वर्ण 'च्' से योग कराने पर अच् प्रत्याहार बनता है। यह अच् प्रत्याहार अपने आदि अक्षर 'अ' से लेकर इत्संजक च् के पूर्व आने वाले औं पर्यन्त सभी अक्षरों का बोध कराता है। अतः,

अच् = अ इ उ ऋ ल् ए ऐ ओ औ।

इसी तरह हल् प्रत्याहार की सिद्धि जैसे सूत्र हयवरट के आदि अक्षर ह को अन्तिम १४ वें सूत्र हल् के अन्तिम अक्षर (या इत् वर्ण) ल् के साथ मिलाने (अनुबन्ध) से होती है। फलतः,

हल् = ह य व र, ल, ज म ड ण न, झ भ, घ ढ ध, ज ब ग ड द, ख फ छ ठ थ च ट त, क प, श ष स, ह।

उपर्युक्त सभी 14 सूत्रों में अन्तिम वर्ण (ए कु इ च् आदि) को पाणिनि ने इत् की संज्ञा दी है। इत् संज्ञा होने से इन अन्तिम वर्णों का उपयोग प्रत्याहार बनाने के लिए केवल अनुबन्ध (Bonding) हेतु किया जाता है, लेकिन व्याकरणीय प्रक्रिया में इनकी गणना नहीं की जाती है अर्थात् इनका प्रयोग नहीं होता है।

वर्णविभाजनं

- ललना - ल् + अ ल् + अ न् + आ
- कृत्वा - क् + ऋ (ये स्वर है) त् + व् + आ
- भ्रमरः - भ् + र् (भ् के बाद) + अ म् + अ र् + अः
- गर्दभः - ग् + अ र् (द् के पहिले) + द् + अ भ् + अः
- आर्द्रता - आ र् + द् + र् (दुसरी बार) + अ त् + आ

म् नियम

- वाक्य के आखिर मे - म्
- अगला शब्द स्वर से चालु - म्
- अगला शब्द व्यञ्जन से चालु - (अनुस्वार)

नासिक

- 'दण्ड' - द के उपर अनुस्वार बोला जाता है लेकिन लिखते समय अगले अक्षर के वर्ग (row) अनुशर नासिक वर्ण लगाया जाता है
- दन्ताः, कंप (X) कम्प (✓), पड़क्षित, सङ्गति, शङ्करः, कण्टकं, दैनन्दिनी, शान्तिः, कम्बलम्, सम्मेलनम्

- इतर वर्ग (rows) अनुस्वार से लिखे जाते हैं - अंशः, सिंहः, कंसः

शब्द/पद

पदम् = प्रकृतिः (root, प्रातिपदिक) + प्रत्ययः (suffix)



नामपदं

	अकारान्तः	आकारान्तः	इकारान्तः	उकारान्तः	ऋकारान्तः	ईकारान्तः	ऊकारान्तः
पुलिङ्ग्	राम		मुनि	शिशु	नेतृ, पितृ		
स्त्रिलिङ्ग्		सीता	मति	धेनु	मातृ	नदी	वर्धू
नपुञ्सकलिङ्ग्	वन		वरि	मधु	धातृ		

रामो राजमणिः सदा विजयते रामं रमेशं भजे

रामेणाभिहता निशाचरचमूः रामाय तस्मै नमः ।

रामान्नास्ति परायणं परतरं रामस्य दासोऽस्म्यहम्

रामे चित्तलयः सदा भवतु मे भो राम मामुद्धर ॥

विभक्ति: / वचनम् Case / Number	Meaning	एकवचनम् Singular	द्विवचनम् Dual	बहुवचनम् Plural
प्रथमा विभक्ति:	Subject	सु	औ	जस्
द्वितीया विभक्ति:	Object	अम्	औट्	शस्
तृतीया विभक्ति:	Instrument	टा	भ्याम्	भिस्
चतुर्थी विभक्ति:	Recipient	डे	भ्याम्	भ्यस्
पञ्चमी विभक्ति:	Point of separation	डसि	भ्याम्	भ्यस्
षष्ठी विभक्ति:	Relation	डस्	ओस्	आम्
सप्तमी विभक्ति:	Location	डि	ओस्	सुप्

As we see सु in 1:1 place it is called सुबन्त pratyaya. Btw, all these manifest as different words when used actually.

Modified सुप् प्रत्यायाः

विभक्ति: / वचनम् Case / Number	Meaning	एकवचनम् Singular	द्विवचनम् Dual	बहुवचनम् Plural
प्रथमा विभक्ति:	Subject	सु - (स)	औ	जस् - (अः)
द्वितीया विभक्ति:	Object	अम्	औट् - (औ)	शस् - (अः)
तृतीया विभक्ति:	Instrument	टा - (आ)	भ्याम्	भिस् - (भिः)
चतुर्थी विभक्ति:	Recipient	डे - (ए)	भ्याम्	भ्यस् - (भ्यः)
पञ्चमी विभक्ति:	Point of separation	डसि - (अः)	भ्याम्	भ्यस् - (भ्यः)
षष्ठी विभक्ति:	Relation	डस् - (अः)	ओस् - (ओः)	आम्
सप्तमी विभक्ति:	Location	डि - (इ)	ओस् - (ओः)	सुप् - (सु)

अजादि प्रत्यय = स्वरसे शुरुवात

Example - चकारान्तः पुलिङ्गः जलमुच् शब्दः

प्रथमा विभक्तिः	Subject	जलमुच् + स् जलमुक्	जलमुच् + औ जलमुचौ	जलमुच् + असः जलमुचः
सं. प्रथमा विभक्तिः	Subject	हे जलमुच् + स् हे जलमुक्	हे जलमुच् + औ हे जलमुचौ	हे जलमुच् + अः हे जलमुचः
द्वितीया विभक्तिः	Object	जलमुच् + अम् जलमुचम्	जलमुच् + औ जलमुचौ	जलमुच् + अः जलमुचः
तृतीया विभक्तिः	Instrument	जलमुच् + आ जलमुचा	जलमुच् + भ्याम् जलमुग्भ्याम्	जलमुच् + भिः जलमुग्भिः
चतुर्थी विभक्तिः	Recipient	जलमुच् + ए जलमुचे	जलमुच् + भ्याम् जलमुग्भ्याम्	जलमुच् + भ्यः जलमुग्भ्यः
पञ्चमी विभक्तिः	Point of separation	जलमुच् + अः जलमुचः	जलमुच् + भ्याम् जलमुग्भ्याम्	जलमुच् + भ्यः जलमुग्भ्यः
षष्ठी विभक्तिः	Relation	जलमुच् + अः जलमुचः	जलमुच् + औः जलमुचोः	जलमुच् + आम् जलमुचाम्
सप्तमी विभक्तिः	Location	जलमुच् + इ जलमुचि	जलमुच् + औः जलमुचोः	जलमुच् + सु जलमुक्षु

सर्वनाम

pronouns, सर्वनामे

- Personal : अस्मद् (मी), युष्मद् (तु), एतद् (हे), तद् (ते)
- Demonstrative : इदम् (हे), अदस् (ते)
- Interrogative: किम् (काय)
- Relative : यद् (कोण)

पुंलिङ्गः

प्रातिपदिकम्	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्	Meaning
एतद् -	एषः	एतौ	एते	This person Nearby
तद् -	सः	तौ	ते	He
इदम् -	अयम्	इमौ	इमे	This person
अदस् -	असौ	अमू	अमी	That person - far away
किम् -	कः	कौ	के	Who
भवत् -	भवान्	भवन्तौ	भवन्तः	You
सर्व -	सर्वः	सर्वौ	सर्वे	All

स्त्रीलिङ्गः

प्रातिपदिकम्	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्	Meaning
एतद् -	एषा	एते	एताः	This person Nearby
तद् -	सा	ते	ताः	SHe
इदम् -	इयम्	इमे	इमाः	This person
अदस् -	असौ	अमू	अमूः	That person - far away
किम् -	का	के	काः	Who
भवत् -	भवती	भवत्यौ	भवत्यः	You
सर्व -	सर्वा	सर्वे	सर्वाः	All

नपुंसकलिङ्गः

प्रातिपदिकम्	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्	Meaning
एतद् -	एतत्	एते	एतानि	This (N) Nearby
तद् -	तत्	ते	तानि	It
इदम् -	इदम्	इमे	इमानि	This(N)
अदस् -	अदः	अमू	अमूनि	That (N) - far away
किम् -	किम्	के	कानि	Who
सर्व -	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि	All

विशेषण

जो शब्द नाम /संज्ञा का वर्णन करता है, उसे विशेषण कहते हैं ।। विशेषण का लिंग, वचन और विभक्ती नाम के लिंग, वचन, विभक्ति के अनुसार होते हैं।

❖ गुणवाचकानि विशेषणानि – धार्मिकः पुरुषः, चपलः वानरः, रक्तं पुष्पम्

❖ परिमाणवाचकानि विशेषणानि – ईषद् अन्नम्

❖ सङ्केतबोधकानि विशेषणानि – इयं सीता

❖ संख्याबोधकानि विशेषणानि – एकं ब्रह्मा, चत्वारः वेदाः, तिसः भार्याः

❖ सर्वनाम can be a विशेषण – अनया वाचा

❖ अव्यय can be a विशेषण – कश्चित् पुरुषः

❖ कृदन्त can be विशेषण - वर्धमानः पुरुषः

❖ तद्वित can be a विशेषण – गुणवान् पुत्रः, दाशरथी रामः

❖ विशेषण concept can be extended to Verbs also. These are क्रिया-विशेषण – मन्दं गच्छति

संख्यावाचकविशेषण

एक, द्वि, त्री, चतुर इन ४ संख्यावाचक विशेषण के विभक्ती पद उनके विशेषयोंके/नामोंके लिंग, वाचन, विभक्ती के अनुसार होते

क्रियापद

क्रियापद = धातु + विकरण प्रत्यय (गण) + प्रत्यय (?पदी, लकार, वाचन)

गण (10)

समूह १ - १, ४, ६, १०

समूह २ - २, ३, ५, ७, ८, ९

१ अ

४ य

६ अ

१० अय

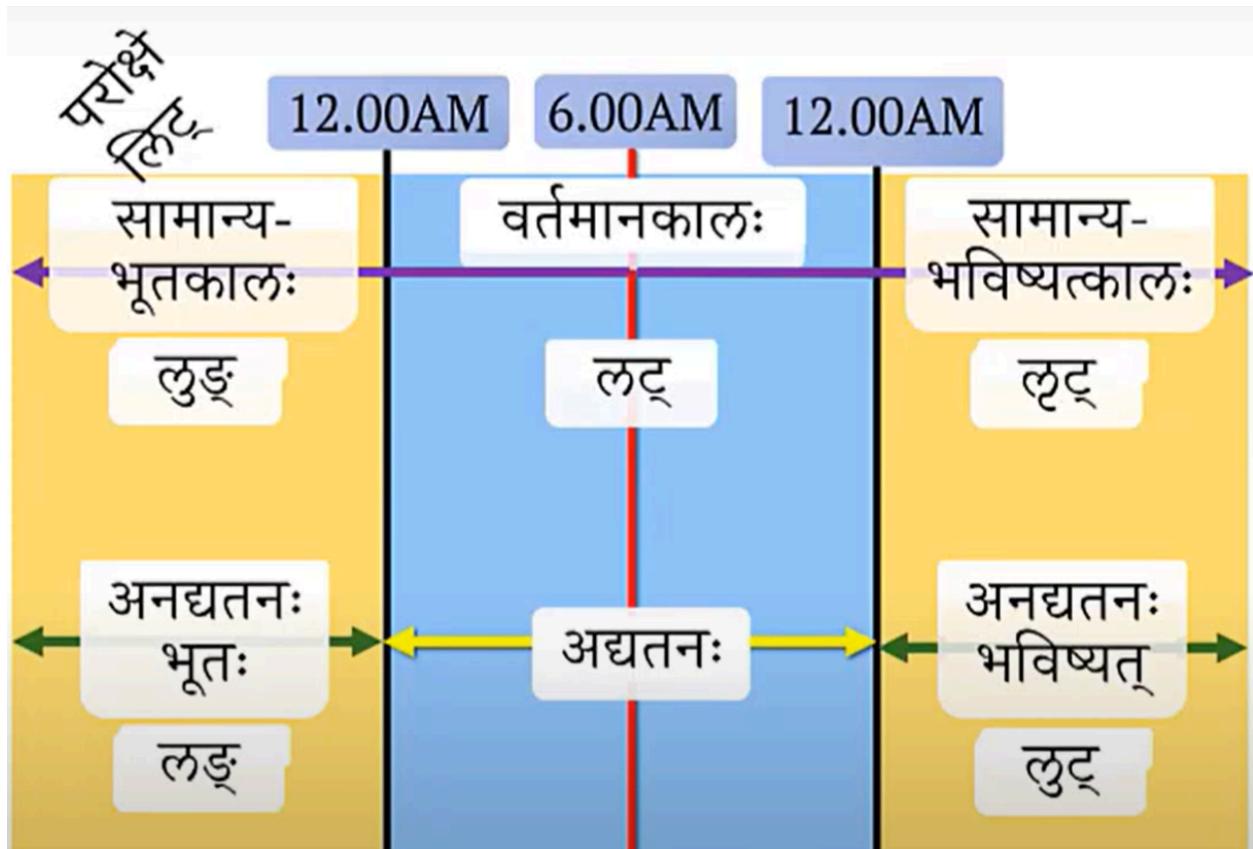
गणनाम Name of the gaṇa	गणस्य प्रत्ययः (विकरणप्रत्ययः) Vikaraṇa pratyaya	तद्रणे वर्तमानाः प्रसिद्धाः धातवः Few dhātus from the gaṇa	उदाहरणम् Examples
भ्वादिः	अ	भू , पठ्	पठ्-अ-ति
अदादिः	-	अस् , रुद्	अस्-(-)-ति
जुहोत्यादिः	-	दा , हु	ददा-(-)-ति
दिवादिः	य	नृत् , क्रुध्	नृत्-य-ति
स्वादिः	नु	शक् , चि	चि-नु-ते
तुदादिः	अ	लिख् , क्षिप्	लिख्-अ-ति
रुधादिः	न	भिद् , छिद्	भिनद्-ति
तनादिः	उ	कृ , तन्	कर-उ-ति
क्र्यादिः	ना	क्री , ज्ञा	जा-ना-ति
चुरादिः	अय	चुर् , कथ्	कथ्-अय-ति

गणनाम Name of the gaṇa	Approximate Number of Dhatus
भ्वादिः	1010
अदादिः	72
जुहोत्यादिः	24
दिवादिः	140
स्वादिः	34
तुदादिः	157
रुधादिः	25
तनादिः	10
क्र्यादिः	61
चुरादिः	410

APPROXIMATE
TOTAL = 1944

Source: Dhaturupanandini by Dr.
JanardanaHegde

लकार



अद्यतनः (today)

कालवाचक

- लट् लकार (वर्तमानकाल) पठति, (= वर्तमान काल) जैसे :- श्यामः खेलति। (श्याम खेलता है।)
- लङ्गलकार (प्रथम भूतकाल past earlier than current day अनद्यतन) अपठत्, आज का दिन छोड़ कर किसी अन्य दिन जो हुआ हो। जैसे :- भवान् तस्मिन् दिने भोजनमपचत्। (आपने उस दिन भोजन पकाया था।)
- लुङ्गलकार (सामान्य भूतकाल simple past) अपाठीत्, (= सामान्य भूत काल) जो कभी भी बीत चुका हो। जैसे :- अहं भोजनम् अभक्षत्। (मैंने खाना खाया।)
- लिट्लकार (परोक्ष भूतकाल you have not experienced it) पपाठ, (= अनद्यतन परोक्ष भूतकाल) जो अपने साथ न घटित होकर किसी इतिहास का विषय हो। जैसे :- रामः रावणं ममार। (राम ने रावण को मारा।)
- लुट्लकार (प्रथम भविष्यकाल अनद्यतन future beyond current day for sure) पठिता, (= अनद्यतन भविष्यत् काल) जो आज का दिन छोड़ कर आगे होने वाला हो। जैसे :- सः परश्वः विद्यालयं गन्ता। (वह परसों विद्यालय जायेगा।)
- लृट्लकार (द्वितीय भविष्यकाल simple future) पठिष्यति, (= सामान्य भविष्य काल) जो आने वाले किसी भी समय में होने वाला हो। जैसे --- रामः इदं कार्यं करिष्यति। (राम यह कार्य करेगा।)

भाववाचक

Say, blessings may be for now or future. For request/command, it can be now or later, so not related to 'time' tense.

- लोट्लकार (आज्ञार्थ) पठतु, (= ये लकार आज्ञा, अनुमति लेना, प्रशंसा करना, प्रार्थना आदि में प्रयोग होता है।) जैसे :- भवान् गच्छतु । (आप जाइए) ; सः क्रीडतु । (वह खेले) ; त्वं खाद । (तुम खाओ) ; किमहं वदानि । (क्या मैं बोलूँ ?)
- लिङ् लकार
 - विधिलिङ् लकार(विध्यर्थ) पठेत् .., (= किसी को विधि बतानी हो।) जैसे :- भवान् पठेत् । (आपको पढ़ना चाहिए।) ; अहं गच्छेयम् । (मुझे जाना चाहिए।)
 - आशीर्लिङ् लकार (आशीर्वादार्थ) पठ्यात्, (= किसी को आशीर्वाद देना हो) जैसे :- भवान् जीव्यात् (आप जीओ) ; त्वं सुखी भूयात् । (तुम सुखी रहो।)
- लृङ् लकार (cause and effect with absence of action) (= ऐसा भूत काल जिसका प्रभाव वर्तमान तक हो) जब किसी क्रिया की असिद्धि हो गई हो। जैसे :- यदि त्वम् अपठिष्यत् तर्हि विद्वान् भवितुम् अर्हिष्यत् । (यदि तू पढ़ता तो विद्वान् बनता।)

उपसर्ग

उपसर्ग धातु से पहले लगते हैं

अति - अधिक

अधि - उपर

अनु - पिछे

अप - दूर, नीचे

अपि - आवरण घालणे

अभि - बाजू में

अव - नीचे

आ - विपरित

उत - उपर

उप - समीप

दुस/दूर - बुरा

नि - बाहर

नीर/निस - अभाव

परा - उलटा

परी - आस पास

प्र - आगे

प्रति - पीछे

वि - विरुद्ध

सम् - एकत्र

सु - अच्छा

प्रत्यय

“प्रकृतिप्रत्यययोजन एव भाषा”

Here the word “प्रकृति / prakṛti” represents all Verb roots & Nominal stems

Verb roots = “धातुः” - this category become words only after enjoining with “तिङ्” group of “प्रत्यय / pratyaya” (inflectional affixes)

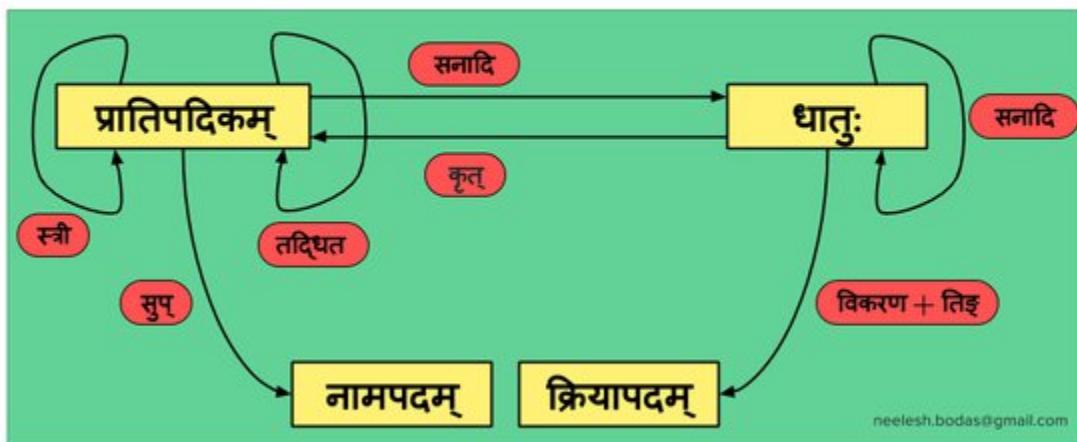
Nominal stems = “प्रातिपदिकम्” - this category become words only after enjoining with “सुप्” group of “प्रत्यय / pratyaya” (inflectional affixes)

The word “प्रत्यय / pratyaya” represents all kinds of inflections.

Every single “पदम् / padam” (“Word” loosely) in Sanskrit must have both the parts.

No word can be used without the appropriate Inflectional affix - this is a rule in Sanskrit
“Vyaakaranam” -- [“सुप्तिङ्न्तम् पदम्” - पाणिनीयं व्याकरणसूत्रम् १.४.१४]

प्रत्ययभेदः:



क्रियापदम् = धातुः + विकरण प्रत्ययः + तिङ्

परस्मैपदप्रत्ययाः				आत्मनेपदप्रत्ययाः			
	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्		एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम- पुरुषः	तिप्	तस्	ज्ञि	प्रथम- पुरुषः	त	आताम्	ज्ञ
मध्यम- पुरुषः	सिप्	थस्	थ	मध्यम- पुरुषः	थास्	आथाम्	ध्वम्
उत्तम- पुरुषः	मिप्	वस्	मस्	उत्तम- पुरुषः	इट्	वहि	महिङ्

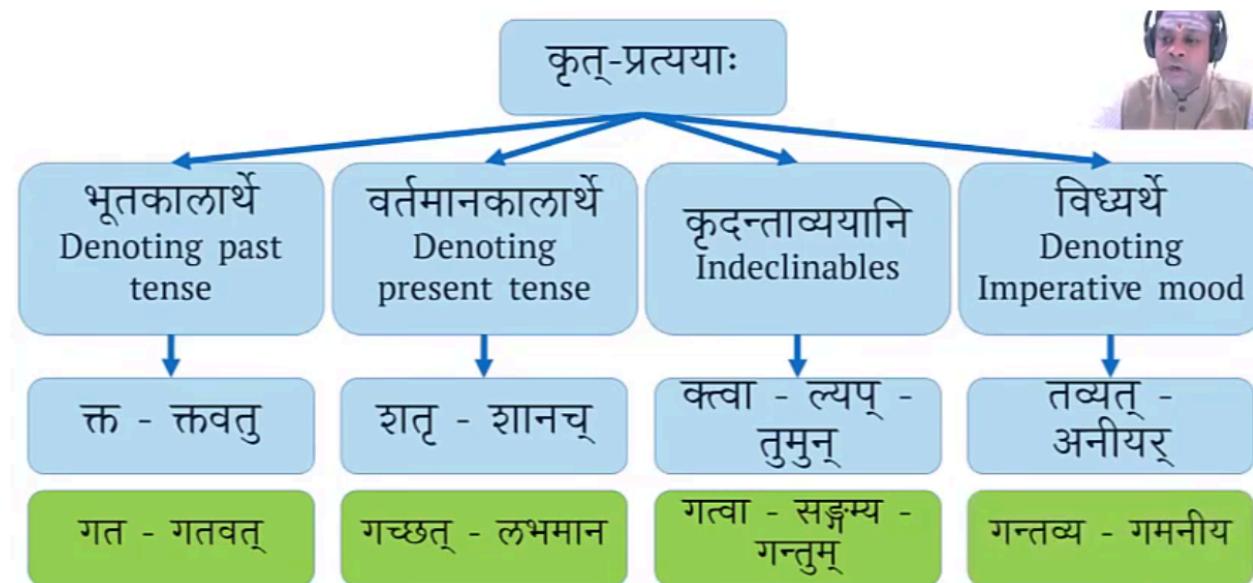
कृदन्ता:

धातुः + कृत् प्रत्ययः = कृदन्तः (प्रातिपदिका, root form of noun) + सुप् प्रत्यय (विभक्ति) = सुबन्तम् (नामपदम्)

कृत् is a set of about 140+ suffixes

कृदन्त is when कृत् is at the end

Basically, making nouns from a verb. They can be कर्ता , कर्म, भाव , conjunctions etc



णमुल् (अम् , कृदन्ता 4th form) स्मारं स्मारम् (two times) to show repetition, eg. kept on remembering

For making noun of verb for “While doing” meaning: शत् for परस्मैपद धातु, शानच् for आत्मनैपद धातु As they become nouns, they become -त् ending, then they are treated in 3 genders

तकारान्तः पुंलिङ्गः पठत्-शब्दः

	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमाविभक्तिः	पठन्	पठन्तौ	पठन्तः
सम्बोधनप्रथमा	हे पठन्	हे पठन्तौ	हे पठन्तः
द्वितीयाविभक्तिः	पठन्तम्	पठन्तौ	पठतः
तृतीयाविभक्तिः	पठता	पठद्याम्	पठद्विः
चतुर्थीविभक्तिः	पठते	पठद्याम्	पठद्यः
पञ्चमीविभक्तिः	पठतः	पठद्याम्	पठद्यः
षष्ठीविभक्तिः	पठतः	पठतोः	पठताम्
सप्तमीविभक्तिः	पठति	पठतोः	पठत्सु

ईकारान्तः स्त्रीलिङ्गः पठन्ती-शब्दः

	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमाविभक्तिः	पठन्ती	पठन्त्यौ	पठन्त्यः
सम्बोधनप्रथमा	हे पठन्ति	हे पठन्त्यौ	हे पठन्त्यः
द्वितीयाविभक्तिः	पठन्तीम्	पठन्त्यौ	पठन्तीः
तृतीयाविभक्तिः	पठन्त्या	पठन्तीभ्याम्	पठन्तीभिः
चतुर्थीविभक्तिः	पठन्त्यै	पठन्तीभ्याम्	पठन्तीभ्यः
पञ्चमीविभक्तिः	पठन्त्याः	पठन्तीभ्याम्	पठन्तीभ्यः
षष्ठीविभक्तिः	पठन्त्याः	पठन्त्योः	पठन्तीनाम्
सप्तमीविभक्तिः	पठन्त्याम्	पठन्त्योः	पठन्तीषु

विभक्ति/वचनम् Case /Number	एकवचनम् Singular	द्विवचनम् Dual	बहुवचनम् Plural	
प्रथमा विभक्तिः	गतवत्	गतवती	गतवन्ति	
सम्बोधनप्रथमा विभक्तिः	हे गतवत्	हे गतवती	हे गतवन्ति	
द्वितीया विभक्तिः	गतवत्	गतवती	गतवन्ति	
तृतीया विभक्तिः	गतवता	गतवद्याम्	गतवद्विः	
चतुर्थी विभक्तिः	गतवते	गतवद्याम्	गतवद्यः	
पञ्चमी विभक्तिः	गतवतः	गतवद्याम्	गतवद्यः	
षष्ठी विभक्तिः	गतवतः	गतवतोः	गतवताम्	
सप्तमी विभक्तिः	गतवति	गतवतोः	गतवत्सु	(अनुलंग)

तकारान्तः
नपुंसकलिङ्गः
गतवत् शब्दः

भूतकालार्थ

In the active voice क्तवतु, in the passive voice क्ति is used.

विभक्ति/वचनम् Case /Number	एकवचनम् Singular	द्विवचनम् Dual	बहुवचनम् Plural
प्रथमा विभक्ति:	गतः	गतौ	गताः
सम्बोधनप्रथमा विभक्ति:	हे गत	हे गतौ	हे गताः
द्वितीया विभक्ति:	गतम्	गतौ	गतान्
तृतीया विभक्ति:	गतेन	गताभ्याम्	गतैः
चतुर्थी विभक्ति:	गताय	गताभ्याम्	गतेभ्यः
पञ्चमी विभक्ति:	गतात्	गताभ्याम्	गतेभ्यः
षष्ठी विभक्ति:	गतस्य	गतयोः	गतानाम्
सप्तमी विभक्ति:	गते	गतयोः	गतेषु

अकारान्तः
पुंलिङ्गः ‘गत’
शब्दः

(गुरुत्व)

विभक्ति/वचनम् Case /Number	एकवचनम् Singular	द्विवचनम् Dual	बहुवचनम् Plural
प्रथमा विभक्ति:	गता	गते	गताः
सम्बोधनप्रथमा विभक्ति:	हे गते	हे गते	हे गताः
द्वितीया विभक्ति:	गताम्	गते	गताः
तृतीया विभक्ति:	गतया	गताभ्याम्	गताभिः
चतुर्थी विभक्ति:	गतायै	गताभ्याम्	गताभ्यः
पञ्चमी विभक्ति:	गतायाः	गताभ्याम्	गताभ्यः
षष्ठी विभक्ति:	गतायाः	गतयोः	गतानाम्
सप्तमी विभक्ति:	गतायाम्	गतयोः	गतासु

आकारान्तः
स्त्रीलिङ्गः
‘गता’ शब्दः

(गुरुत्व)

विभक्ति/वचनम् Case /Number	एकवचनम् Singular	द्विवचनम् Dual	बहुवचनम् Plural
प्रथमा विभक्ति:	गतम्	गते	गतानि
सम्बोधनप्रथमा विभक्ति:	हे गत	हे गते	हे गतानि
द्वितीया विभक्ति:	गतम्	गते	गतानि
तृतीया विभक्ति:	गतेन	गताभ्याम्	गतैः
चतुर्थी विभक्ति:	गताय	गताभ्याम्	गतेभ्यः
पञ्चमी विभक्ति:	गतात्	गताभ्याम्	गतेभ्यः
षष्ठी विभक्ति:	गतस्य	गतयोः	गतानाम्
सप्तमी विभक्ति:	गते	गतयोः	गतेषु

अकारान्तः
नपुंसकालिङ्गः
‘गत’ शब्दः

(गुरुत्व)

कथा पठिता (वाचलेली गोष्ट)

विधर्थ्य

अनियर

Should do करणीयं

Should go गमनीयं

तव्य

Should be read पठितव्यं

Should be written लेखितव्यम्

समास

दो या अधिक शब्द जोड़कर एक शब्द

अनेकस्य पदस्य एकपदीभवनम्

रामः लक्ष्मणः च वनं गच्छतः

वाक्यम्

रामः	लक्ष्मणः	च	वनम्	गच्छतः
------	----------	---	------	--------

पदानि

रामलक्ष्मणौ	वनम्	गच्छतः
-------------	------	--------

समस्तपदम्	पूर्वपदम्	उत्तरपदम्	विग्रहवाक्यम्
सीता-पति:	सीता	पति	सीतायाः पतिः
उप-कृष्णम्	उप	कृष्ण	कृष्णस्य समीपम्
पुस्तक-हस्तः	पुस्तक	हस्त	पुस्तकं हस्ते यस्य सः
राम-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्नः	राम	शत्रुघ्न	रामः च लक्ष्मणः च भरतः च शत्रुघ्नः च

सन्धि में वर्णों का मेल होता है। समास में पदों का समास में भी अंतर्गत संधी हो सकता है।

In between words, sandhi is mandatory,

sandhi is mandatory in dhatu and upasarga

sandhi is mandatory inside samasa, but doing samasa in sentence is optional

सन्धिः Vs समासः

❖ देवालयः

❖ पित्राज्ञा

❖ मनोहरः

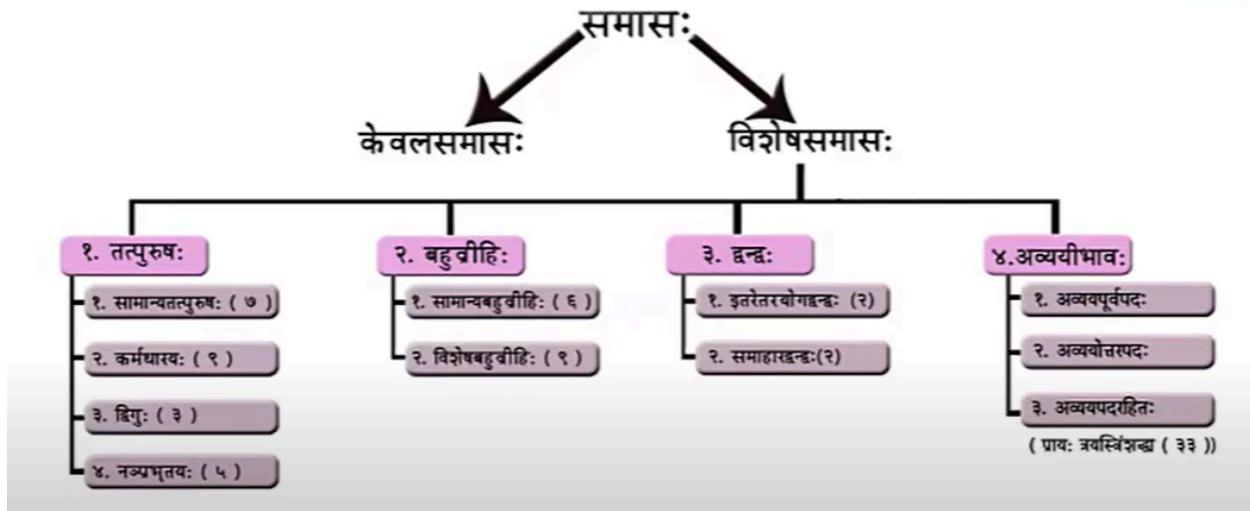
समासः + सन्धिः

❖ देवस्यालयः

❖ पितुराज्ञा

❖ मनसोहरः

केवलः सन्धिः



केवल समास just joins the words and is rare.

अहं च त्वं च राजेन्द्र
लोकनाथावुभावपि ।
बहुत्रीहिरहं राजन्
षष्ठीतत्पुरुषो भवान् ॥

बहुत्रीहिः – लोकः नाथः यस्य सः – अनाथः, लोकम् आश्रित्य जीवति भिक्षुकः For whom the whole world is his lord (Beggar)

षष्ठीतत्पुरुषः – लोकर्य नाथः – राजा

प्रायः उत्तरपदार्थप्रधानः तत्पुरुषसमासः

उदा – रामभक्तः प्रणमति ।

प्रायः अन्यपदार्थप्रधानः बहुत्रीहिसमासः

उदा – पीताम्बरः गच्छति ।

प्रायः उभयपदार्थप्रधानः द्वन्द्वसमासः

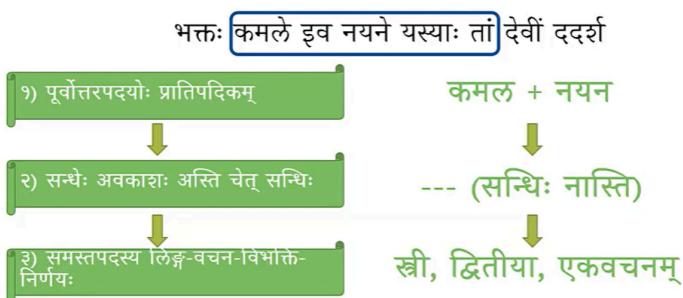
उदा – रामकृष्णौ गच्छतः ।

प्रायः पूर्वपदार्थप्रधानः अव्ययीभावः

उदा – उपविद्यालयं बालाः क्रीडन्ति ।

एतेषां केचन अपवादाः सन्ति, तान् तत्रैव स्थले ज्ञास्यामः ।

Steps to do the samas

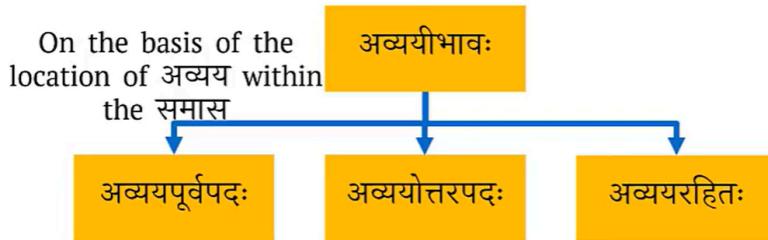


द्वन्द्व

इस समास के दोनों पद प्रधान होते हैं एवं एक दूसरे के विलोम होते हैं

अव्ययीभाव

इस समास में पहला पद अव्यय होने के साथ ही साथ प्रधान भी होता है। समास होने पर समस्त पद अव्यय बन जाता है तथा नपंसकलिङ्ग में प्रयुक्त होता है

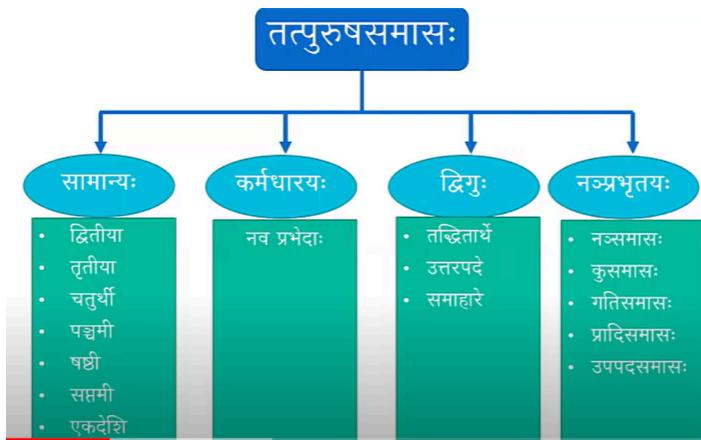


Note: As the name suggests, अव्ययीभाव-समास will be अव्यय always

Always remember that the पूर्वपद & उत्तरपद are to be identified in the समास and not विग्रह

तत्पुरुष

उत्तर पद की प्रधानता होती है। इसके दोनों पदों में अलग-अलग विभक्तियाँ होती हैं। कहीं-कहीं पर दोनों पदों में समान विभक्ति भी होती है। ऐसी स्थिति में पर्वूपद की विभक्ति का लोप करके समस्त पद बनाया जाता है।



सामान्यतत्पुरुषः - सप्त प्रभेदाः

समासः	समस्तपदम्	विग्रहवाक्यम्
प्रथमातत्पुरुषः (एकदेशिसमासः)	पूर्वकायः	पूर्वं कायस्य
द्वितीयातत्पुरुषः	ग्रामगतः	ग्रामं गतः
तृतीयातत्पुरुषः	नखभिन्नः	नखैः भिन्नः
चतुर्थातत्पुरुषः	गोहितम्	गवे हितम्
पञ्चमीतत्पुरुषः	चोरभयम्	चोरात् भयम्
षष्ठीतत्पुरुषः	वृक्षशाखा	वृक्षस्य शाखा
सप्तमीतत्पुरुषः	कार्यकुशलः	कार्ये कुशलः

नवप्रभृतयः पञ्च

समासः	विग्रहः	नाम
अधर्मः	न धर्मः	नवसमासः
कुपुरुषः	कुत्सितः पुरुषः	कुसमासः
शुक्रीकृत्य	अशुक्रं शुक्रं कृत्वा	गतिसमासः
प्राचार्यः अतिदेवः निर्वाराणासिः	प्रगतः आचार्यः अतिक्रान्तः देवम् निष्क्रान्तः वाराणस्या	प्रादिसमासः
कुम्भकारः	कुम्भं करोति इति	उपपदसमासः

द्विगु

पूर्वपद संख्यावाचक विशेषण होता है तथा समस्त पद किसी समूह को बोध होता है

कर्मधारय

पूर्व पद तथा उत्तर पद के मध्य में विशेषण-विशेष्य का संबंध होता है

बहुत्रीहि

दोनों पद अप्रधान हों और समस्तपद के अर्थ के अतिरिक्त कोई सांकेतिक अर्थ प्रधान

विशेषः बहुत्रीहिः नवधा

नाम	विग्रहः	समासः
व्यद्धिकरणः	चक्रं पाणौ यस्य सः	चक्रपाणिः
सङ्ख्योत्तरपदः	विंशते: समीपे ये सन्ति ते	उपविंशाः
सङ्ख्योभयपदः	द्वौ वा त्रयो वा	द्वित्राः
सहपूर्वपदः	शिष्येण सह वर्तते इति	सशिष्यः
व्यतिहारलक्षणः	केशेषु केशेषु गृहीत्वा इदं युद्धं प्रवृत्तम्	केशाकेशि
दिग्न्तराललक्षणः	दक्षिणस्याः पूर्वस्याः दिशो यदन्तरालम्	दक्षिणपूर्वा
नव् बहुत्रीहिः १४	अविद्यमानः पुत्रः यस्य सः	अपुत्रः
प्रादिवहुत्रीहिः	निर्गता कृपा यस्मात् सः	निष्कृपः
उपमानपूर्वपदः	गजननामिव आननं यस्य सः	गजाननः

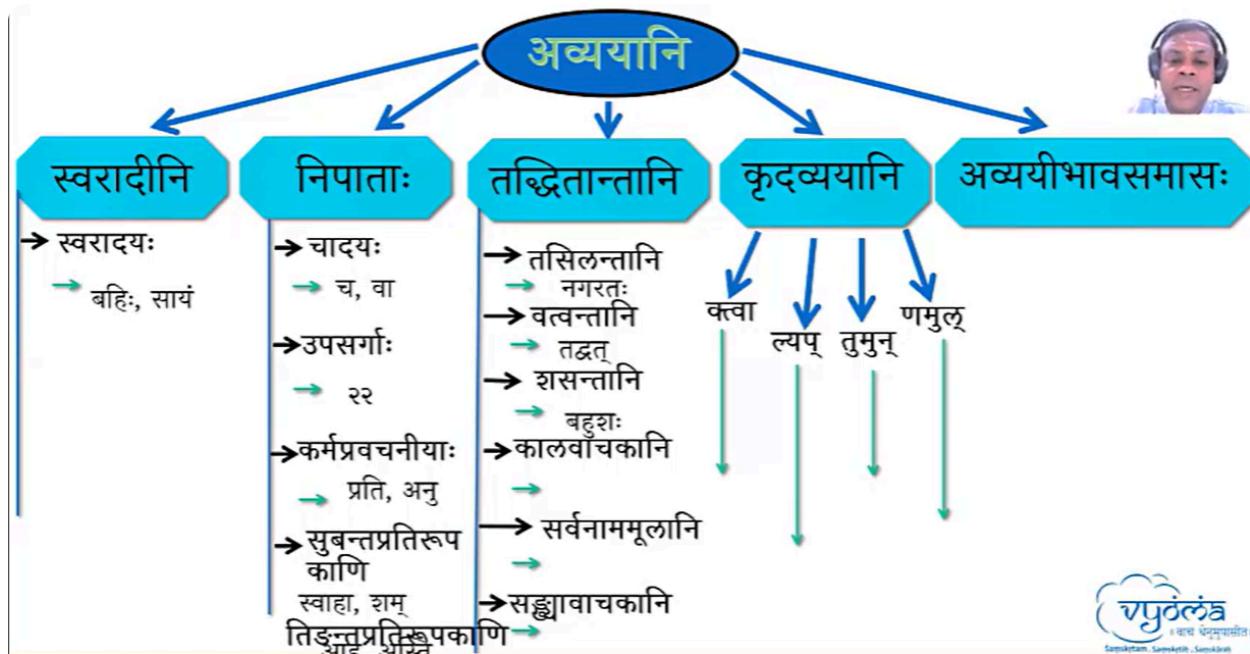
सर्वनाम

अव्यय

सर्वनाम मूलानि अव्ययानि : यदा-तदा, यत्र-तत्र ...

कालवाचक अव्ययानि: अद्य, श्व, ह्यः ...

संख्यवाचकानि अव्ययानि : शतशः



सन्धि

Phonetic transformation while joining the **sounds** (not script based).

संहिता closeness between sounds

संधिकार्य change in resultant sound due to संहिता

If new sound comes in place then that's called 'आदेशा/शत्रु', for coming of a new sound, it's called 'आगमा', if sound disappears it's called 'लोप'

सम् + धा - एकत्र करणे - पूर्वपद का अन्तिम वर्ण + उत्तरपद का पहिला वर्ण

स्वरसन्धयः

१. यणसन्धिः
२. यान्तवान्तादेशसन्धिः
३. सवर्णदीर्घसन्धिः
४. गुणसन्धिः
५. वृद्धिसन्धिः
६. पूर्वरूपसन्धिः
७. पररूपसन्धिः

व्यञ्जनसन्धयः

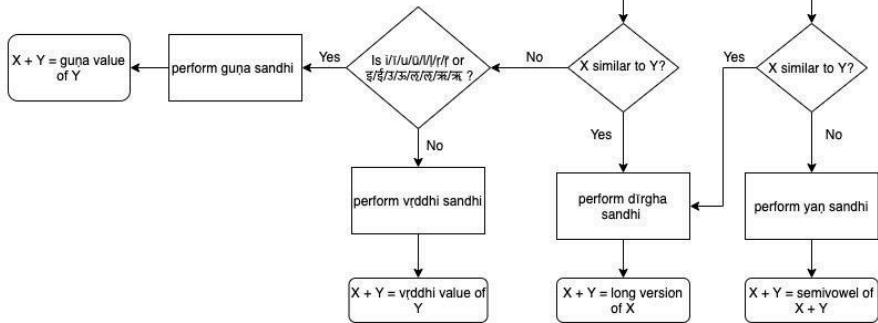
१. श्रुत्वसन्धिः
२. षुत्वसन्धिः
३. अनुनासिकसन्धिः
४. जश्वसन्धिः
५. चर्त्वसन्धिः
६. अनुस्वारसन्धिः
७. परस्वर्णसन्धिः
८. छत्वसन्धिः
९. पूर्वस्वर्णसन्धिः
१०. डमुडागमसन्धिः
११. तुगागमसन्धिः
१२. सत्वसन्धिः

विसर्गसन्धयः

१. लोपसन्धिः
२. उकागदेशसन्धिः
३. रेफादेशसन्धिः
४. सकागदेशसन्धिः
५. जिह्वामूलीवः उपथानीवश्च

[Go to Lessons](#)

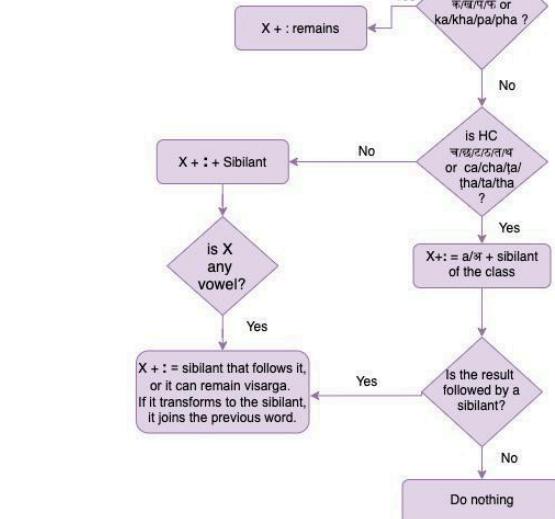
I.simple	II.dirgha	III.guṇa	IV.vṛddhi	semivowels
a/ā	ā	a	ā	NA
i/ī	ī	ṝ	ṝ	ṝ
u/ū	ū	়ো	়ো	়
r/ର	ର	ର	ର	ର
l/ଲ	ଲ	ଲ	ଲ	ଲ
diphthongs				
ଏ				ay
ଓ				av
ଇ				āy
ଔ				āv



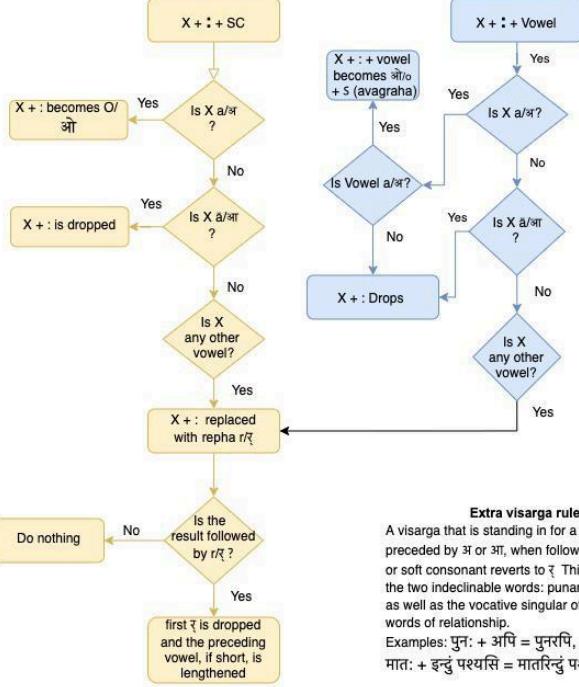
Exceptions

- If the first word ends in dual ending ଏ, ି, or ି ending then you don't combine it. Keep in mind this doesn't apply to া ending like rāmaু, this is a confusion from using the romanization.
- If two vowels are left behind after a consonant or visarga sandhi operation those vowels don't combine.
- following yāntavāntādēśa operations, the ଯ and ତ are optionally dropped and no further sandhi takes place. Keep in mind that the a or া from the original change অয় and আয় আত stays.
- ়ো at the end of word followed by a short ৰ is optionally not combined and the preceding vowel if long is made short.
 - brahmā ṣih -- brahmāṛṣih (like guna) rule or brahma ṣih (the option)
 - sapta ṣiñām -- saptarṣiñām (like guna) or sapta ṣiñām(the option)

क	ख	ग	घ	ङ	ह
का	खा	गा	ঘা	ঙা	হা
ক	খ	গ	ঘ	ঙ	হ
কা	খা	গা	ঘা	ঙা	হা
ত	থ	জ	ঝ	ঝ	ষ
তা	থা	জা	ঝা	ঝা	ষা
তি	থি	জি	ঝি	ঝি	ষি
তে	থে	জে	ঝে	ঝে	ষে
তি	থি	জি	ঝি	ঝি	ষি
তে	থে	জে	ঝে	ঝে	ষে
তি	থি	জি	ঝি	ঝি	ষি
প	ফ	ব	ভ	ম	ব
পা	ফা	বা	ভা	মা	বা
পি	ফি	বি	ভি	মি	বি
পে	ফে	বে	ভে	মে	বে
পি	ফি	বি	ভি	মি	বি
পে	ফে	বে	ভে	মে	বে



Visarga Sandhi



Extra visarga rule:
A visarga that is standing in for a র even when preceded by ম or আ, when followed by a vowel or soft consonant reverts to র. This is seen with the two indeclinable words: punar and prātar, as well as the vocative singular of ম ending words of relationship.
Examples: পুনঃ + অপি = পুনরংপি,
মাতঃ + ইন্দু পঞ্চসি = মাতারিন্দু পঞ্চসি

Exception:
sah/সঃ and esah/এসঃ follow the same rules as above, except that before all, including hard consonants, the visarga still drops off

स्वरसन्धि

अच्चसन्धिः

	अ	इ	उ	ऋ	लृ	ए	ओ	ऐ	औ
अ	आ	ए	ओ	अर्	अल्	ऐ	औ	ऐ	औ
इ	य्	ई	य्						
उ	व्	व्	ऊ	व्	व्	व्	व्	व्	व्
ऋ	र्	र्	र्	ऋ	ऋ	र्	र्	र्	र्
लृ	ल्	ल्	ल्	ऋ	ऋ	ल्	ल्	ल्	ल्
ए	अय्								
ओ	अव्								
ऐ	आय्								
औ	आव्								

सर्वर्णदीर्घसंधी

अ/आ + अ /आ = आ

इ/ई + इ / ई = ई

उ/ऊ + उ /ऊ = ऊ

गुण - संधी

अ /आ + इ /ई = ए

अ /आ + उ/ऊ = ओ

अ /आ + ऋ / ऋ = अर्

वृद्धि- संधी

अ/आ + ए/ऐ = ऐ

अ/आ + ओ /औ = औ

यण्- संधी

इ/ई + विजातिय स्वर = य्

उ/ऊ + विजातिय स्वर = व

ऋ / ऋ + विजातिय स्वर = र

अयवायाव- संधी

ए + स्वर = अय्

ऐ + स्वर = आय्

ओ + स्वर = ओव्

औ + स्वर = आव्

ए/ओ + अ = s

व्यञ्जनसन्धि

व्यञ्जन + व्यञ्जन

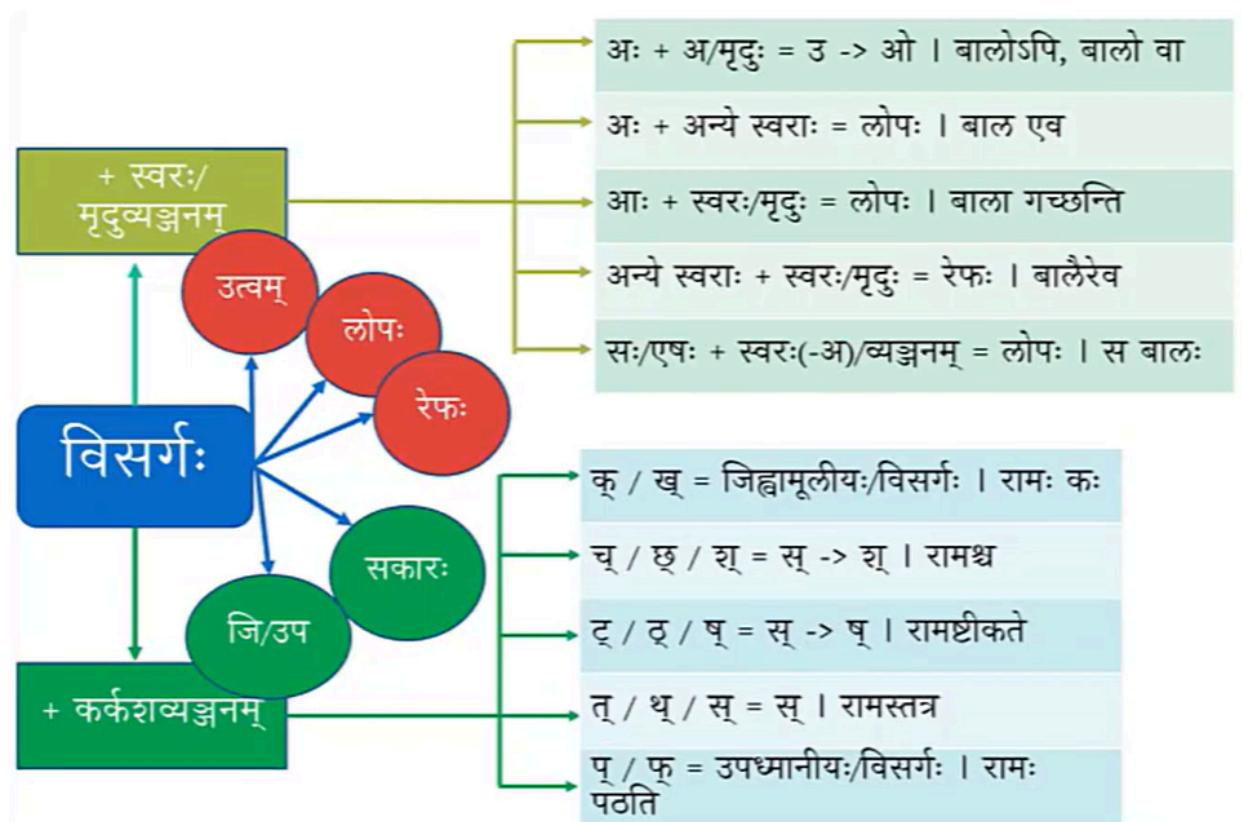
	वर्गस्य १,२, श्,ष्,स् =	वर्गस्य १ (चतुर्वर्षसन्धिः)
वर्गीयव्यञ्जनम् +	स्वराः, वर्गस्य ३,४,५, य्,व्,र्,ल् =	वर्गस्य ३ (जश्त्वसन्धिः)
	वर्गस्य ५ =	वर्गस्य ५ (अनुनासिकसन्धिः)
सकारः / तर्वर्गः +	श् / चवर्गः =	श् / चवर्गः (श्वृत्वसन्धिः)
	ष् / टर्वर्गः =	ष् / टर्वर्गः (ष्ट्रृत्वसन्धिः)
तर्वर्गः +	ल् =	ल् / लँ (परसवर्णसन्धिः)

म् +	व्यञ्जनम् =	अनुस्वारः (अनुस्वारसन्धिः)
अनुस्वारः +	वर्गीयव्यञ्जनम् =	वर्गस्य ५ (परसवर्णसन्धिः)
	य्,व्,ल् =	यँ,वँ,लँ (परसवर्णसन्धिः)

(वर्गीयव्यञ्जनाः - अनुनासिकाः) +	ह् =	वर्गस्य ४ (पूर्वसर्वणसन्धिः)
वर्गस्य १ +	श् =	छ् (छत्वसन्धिः)
हस्वस्वरः + ड्/ण्/न् +	स्वरः =	ड्/ण्/न् (डमुडागमसन्धिः)
स्वराः +	छ् =	च् (तुगागमः)

विसर्गसन्धि

विसर्ग (ः)



प्रयोग

कर्तरि (Active)

कर्मणि (Passive)

भावे (Impersonal)

कुम्भकारः घटं करोति => कर्तुः प्रधान्यम् => कर्तरि, क्रियापद changes according to कर्ता, कुम्भकरा: ...
कुर्वन्ति

कुम्भकारेण घटः क्रियते => कर्मणः प्रधान्यम् => कर्मणि, क्रियापद changes according to कर्म, घटा: ...
क्रियन्ते

पुष्पाणि विकसन्ति => क्रियायाः प्रधान्यम् => भावे

प्रयोगः	कर्तृपदम्	कर्मपदम्	क्रियापदम्	प्राधान्यम्
कर्तरिप्रयोगः	प्रथमा विभक्त्यन्तम्	द्वितीया विभक्त्यन्तम्	परस्मैपदिनि / आत्मनेपदिनि कर्तृपदम् अनुसरति ।	कर्तुः
कर्मणिप्रयोगः	तृतीया विभक्त्यन्तम्	प्रथमा विभक्त्यन्तम्	आत्मनेपदिनि एव। कर्मपदम् अनुसरति । मध्ये यकारः	कर्मणः
भावे प्रयोगः	तृतीया विभक्त्यन्तम्	न भवति	आत्मनेपदिनि भवति । प्रथमपुरुष-एकवचने एव भवति । मध्ये यकारः ।	क्रियायाः

प्रयोग परिवर्तनम्



For परस्मै पद

धातु + य (for 1,4,6,10 गण) + आत्मनेपद प्रत्ययः

खादति => खाद् + य _ ते => खाद्यते

For आत्मनैपदी

धातु + य (for 1,4,6,10 गण) + आत्मनैपद प्रत्ययः

यत्ते => यत् + य + ते => यत्यते

उद्घारणम् - कर्तरिप्रयोगः --



कर्मणिप्रयोगः

1

Step 2	1.1	2.1	1.1
Step 1	कर्तृपदम्	कर्मपदम्	क्रियापदम्

बालः पाठं पठति

Step 3

3.1 बालेन	1.1 पाठः	1.1 पठ्यते	पद् + य + ते
--------------	-------------	---------------	-----------------

अतः कर्तृरि-
प्रयोगः

कर्मणि-
प्रयोगः

प्रयोगः	कर्तृपदम्	कर्मपदम्	क्रियापदम्
कर्तरिप्रयोगः	प्रप्या विभक्त्यतम्	द्वितीया विभक्त्यतम्	परस्परेविनि / आत्मनैपदीनि भवति । कर्तृपदम् अनुसरते ।
कर्मणिप्रयोगः	तृतीया विभक्त्यतम्	प्रप्या विभक्त्यतम्	आत्मनैपदीनि एव भवति । कर्मपदम् अनुसरते । मध्ये यकारः ।
भवे प्रयोगः	तृतीया विभक्त्यतम्	न भवति	आत्मनैपदीनि भवति । प्रप्यापुरुष-एकवरदने एव भवति । मध्ये यकारः ।
			क्रियापदम्

sanskritgrammar.vyoma@gmail.com
www.sanskritfromhome.in

High School Sanskrit Grammar Made Easy- Vid.Venkatasubramanian P

उद्घारणम् - कर्तरिप्रयोगः --



कर्मणिप्रयोगः

2

Step 2	1.2	2.1	1.2
Step 1	कर्तृपदम्	कर्मपदम्	क्रियापदम्

बालौ पाठं पठतः

Step 3

3.2 बालभ्याम्	1.1 पाठः	1.1 पठ्यते	पद् + य + ते
------------------	-------------	---------------	-----------------

अतः कर्तृरि-
प्रयोगः

कर्मणि-
प्रयोगः

प्रयोगः	कर्तृपदम्	कर्मपदम्	क्रियापदम्
कर्तरिप्रयोगः	प्रप्या विभक्त्यतम्	द्वितीया विभक्त्यतम्	परस्परेविनि / आत्मनैपदीनि भवति । कर्तृपदम् अनुसरते ।
कर्मणिप्रयोगः	तृतीया विभक्त्यतम्	प्रप्या विभक्त्यतम्	आत्मनैपदीनि एव भवति । कर्मपदम् अनुसरते । मध्ये यकारः ।
भवे प्रयोगः	तृतीया विभक्त्यतम्	न भवति	आत्मनैपदीनि भवति । प्रप्यापुरुष-एकवरदने एव भवति । मध्ये यकारः ।
			क्रियापदम्

sanskritgrammar.vyoma@gmail.com
www.sanskritfromhome.in

High School Sanskrit Grammar Made Easy- Venkatasubramanian P

samskrtaam.samskrtaam.samskrtaam

उदाहरणम् - कर्तिरप्रयोगः --

कर्मणिप्रयोगः

6

Step 2

1.3

Step 1

कर्तृपदम्

2.2

कर्मपदम्

1.3

क्रियापदम्

प्रयोगः	कर्तृपदम्	कर्मपदम्	क्रियापदम्	प्रायापदम्
वर्तिरप्रयोगः	द्वया विभक्तपदम्	द्वितीया विभक्तपदम्	नवतीर्थपदम् / अल्पवर्णपदम्	कर्तृपदम् सुवर्णरत्ने । कर्म्
कर्मणिप्रयोगः	तृतीया विभक्तपदम्	प्रथमा विभक्तपदम्	अल्पवर्णपदम् एव। कर्मपदम् अनुसरते । न पृष्ठ उक्तः	कर्मेन्
क्रियाप्रयोगः	तृतीया विभक्तपदम्	न अशासी	अल्पवर्णपदम् एव। इत्यादेव व्याख्यानं एव। विद्याया भवति । लघु वर्णस्तः ।	विद्याया

बालाः पाठौ पठन्ति

अतः कर्तृरे-
प्रयोगः

Step 3

3.3

बालैः

1.2

पाठौ

1.2

पठ्यते

पठ् + य +
इते

कर्मणि-
प्रयोगः

sanskritgrammar.vyoma@gmail.com

High School Sanskrit Grammar Made Easy- Venkatasubramanian P

www.sanskritfromhome.in

कर्तरि --- कर्मणि (मध्यम-पुरुषस्य)

सः युज्मान् पश्यति

तेन^{१३} युज्य^{१५} दृश्यत्वं

तौ युज्मान् पश्यतः

ताम्या^{१०} युज्य^{११} दृश्यत्वं

ते युज्मान् पश्यन्ति

ते^{१६} युज्य^{१७} दृश्यत्वं



sanskritgrammar.vyoma@gmail.com

High School Sanskrit Grammar Made Easy- Venkatasubramanian P

www.sanskritfromhome.in

अभ्यासः - ४ - प्रयोगपरिवर्तनं कुरुत (लट् - लकारः - कर्तरि - कर्मणि)



- ❖ अहं कार्यं करोमि ।
- ❖ नृपः शत्रुं हन्ति ।
- ❖ सर्वे ईश्वरं पूजयन्ति ।
- ❖ सः रूपयकाणि गणयति
- ❖ त्वं मातरं सेवस्ते ।

प्रयोगः	वर्तीपदम्	वर्तीपदम्	क्रियापदम्	प्रापान्वम्
कर्तीप्रयोगः	प्रथमा विभूतवन्तम्	द्वितीया विभूतवन्तम्	परस्परेविनि / आम्बेविनि	कर्तुः
कर्तीप्रयोगः	तृतीया विभूतवन्तम्	प्रथमा विभूतवन्तम्	कर्मणम् तुवस्तीति ।	कर्मणः
भावे प्रयोगः	तृतीया विभूतवन्तम्	न भवति	आम्बेविनि एव। कर्मणम् अन्तर्दीति । ममे तुवहोः ।	आम्बेविनि भवति । प्रथमपूर्व-प्रक्रियाम् एव भवति । ममे यज्ञाः ।
				क्रियापदम्

अभ्यासः - ४ - प्रयोगपरिवर्तनं कुरुत (लट् - लकारः - कर्तरि - भाव)



- ❖ यूयं हसथ ।
- ❖ त्वं रोदिषि
- ❖ छात्रा तिष्ठति।
- ❖ वाटिकायां पुष्यं विकसति।
- ❖ अहं वैकुण्ठे शये।

युष्माभिः हस्यते
त्वया रुद्यते ?
छात्रया स्थीयते
वाटिकायां पुष्येण विकस्यते
मया वैकुण्ठे शायते

क्रुदन्तानान् प्रयोगः:

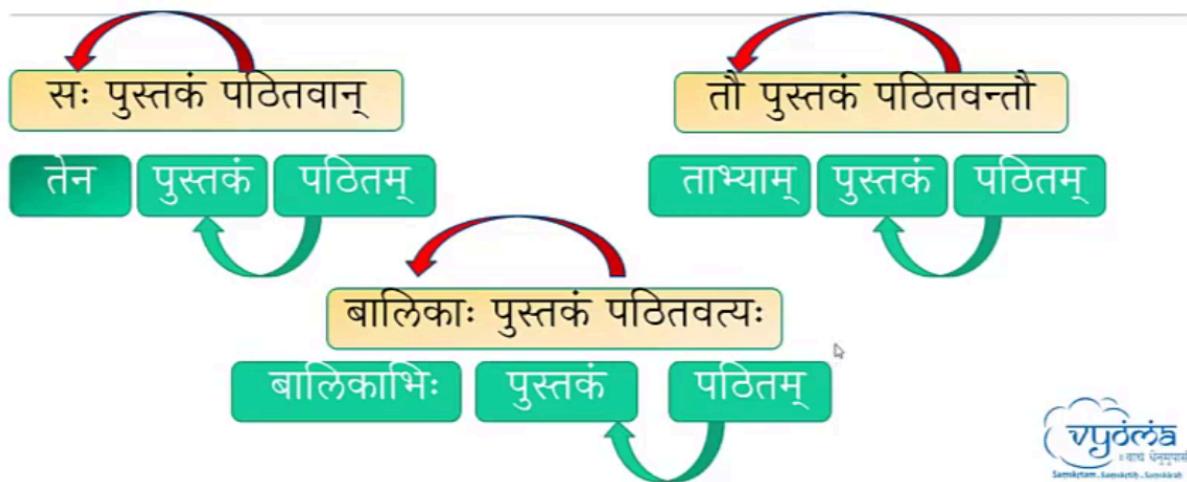
(same except क्रियापदं)

कृदन्तानाम् प्रयोगः - क्त-क्तवतु-प्रत्ययौ



प्रयोगः	कर्तृपदम्	कर्मपदम्	क्रियापदम्	प्रधानम्
कर्तरिप्रयोगः	प्रथमा विभक्त्यन्तम्	द्वितीया विभक्त्यन्तम्	क्तवतु प्रत्ययान्तः । कर्तृपदम् अनुसरति ।	कर्ता
कर्मणिप्रयोगः	तृतीया विभक्त्यन्तम्	प्रथमा विभक्त्यन्तम्	क्त - प्रत्ययान्तः । कर्मपदम् अनुसरति ।	कर्म
भावे प्रयोगः	तृतीया विभक्त्यन्तम्	न भवति	क्त -प्रत्ययान्तः । प्रथमा विभक्तौ एकवचने नपुंसकलिङ्गे एव भवति ।	प्रथमा विभक्तौ एकवचने नपुंसकलिङ्गे एव भवति ।

उपर्युक्तं
Samkrta, Samkshipta, Samkrish



उपर्युक्तं
Samkrta, Samkshipta, Samkrish

कारकः

Relationship with क्रिया is called कारकः

पाकक्रिया – पचति To Cook

- ❖ देवदत्तः Devadutta
- ❖ महानसे – in the Kitchen
- ❖ आवपनात् = from a larger vessel
- ❖ तण्डुलं - Rice
- ❖ स्थाल्यां – in the cooker
- ❖ अग्निना – Fire
- ❖ पचति

Every padartha has got a role to play in the act of cooking
 The main action kriya is made of many subactions
 The action is complete when the result is obtained



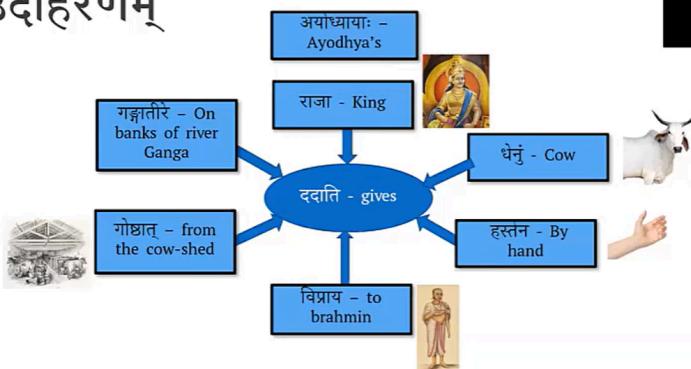
Which things are involved in getting the 'act' done?

कर्ता is directly involved whereas others are indirectly involved. All involved are कारकः They have विभक्तिः

कारक and विभक्ति

कारक	विभक्ति
कारक is one of the निमित्त for the विभक्ति to occur in a sentence	विभक्ति is a means to bring out the कारकशक्ति in the words.
कारक has to be understood separately as a concept	By seeing the विभक्ति we can't say that we will be able to identify कारक
कारक is common to all languages and language independent	विभक्ति are suffixes added to the प्रातिपदिक to give noun forms in sentences in Sanskrit.
	विभक्ति can express कारक as well as things other than कारक

उदाहरणम्

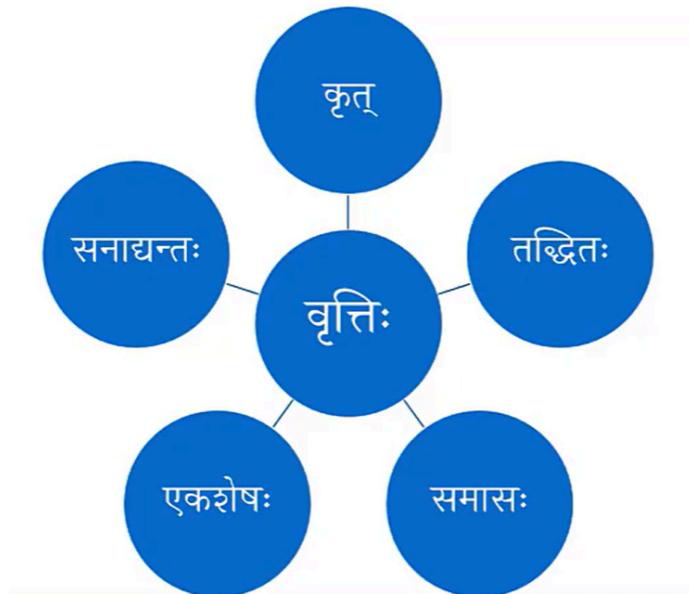


All pictures taken from <https://www.google.com/imghp>

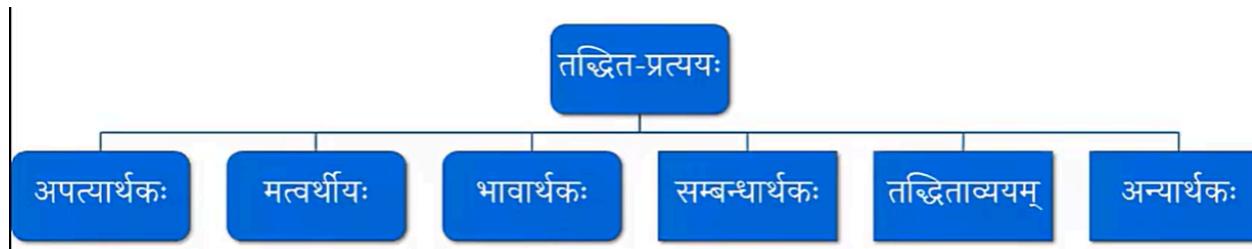
All are कारक except Ayodhya, as it is not directly involved in the action.

तद्धितः

If multiple words join to give a unique word that's called वृति

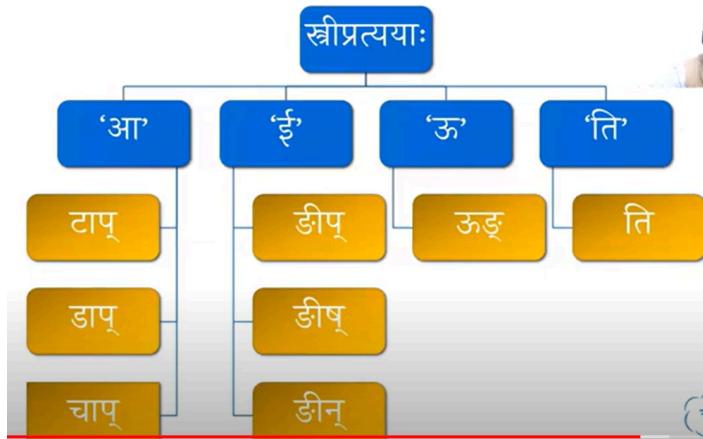


The suffixes which are added to the प्रातिपदिका to make the usage easier and shorter.



स्त्रीप्रत्ययाः

Suffixes that make the word feminine.



आ - टाप्

- | | | |
|-------------------|-------------------------|-----------------------|
| ❖ अजः - अजा | ❖ एकः - एका | ❖ ज्येष्ठः - ज्येष्ठा |
| ❖ अश्वः - अश्वा | ❖ शिवः - शिवा | ❖ मन्दः - मन्दा |
| ❖ चटकः - चटका | ❖ कृशः - कृशा | |
| ❖ कोकिलः - कोकिला | ❖ क्षत्रियः - क्षत्रिया | |
| ❖ वृद्धः - वृद्धा | ❖ रजकः - रजका | |
| | ❖ बालः - बाला | |

ई - डीप् (नकारान्तेभ्यः)

- | | |
|-----------------------|-----------------------|
| ❖ कामी - कामिनी | ❖ दण्डी - दण्डिनी |
| ❖ गामी - गामिनी | ❖ गुणी - गुणिनी |
| ❖ तेजस्वी - तेजस्विनी | ❖ तपस्वी - तपस्विनी |
| | ❖ मनोहारी - मनोहारिणी |
| | ❖ मनस्वी - मनस्विनी |

सन्नन्तः

सन् is joined after धातु if the meaning of 'desire to do the action' is present. Typically part of the धातु is repeated twice when सन् is joined.

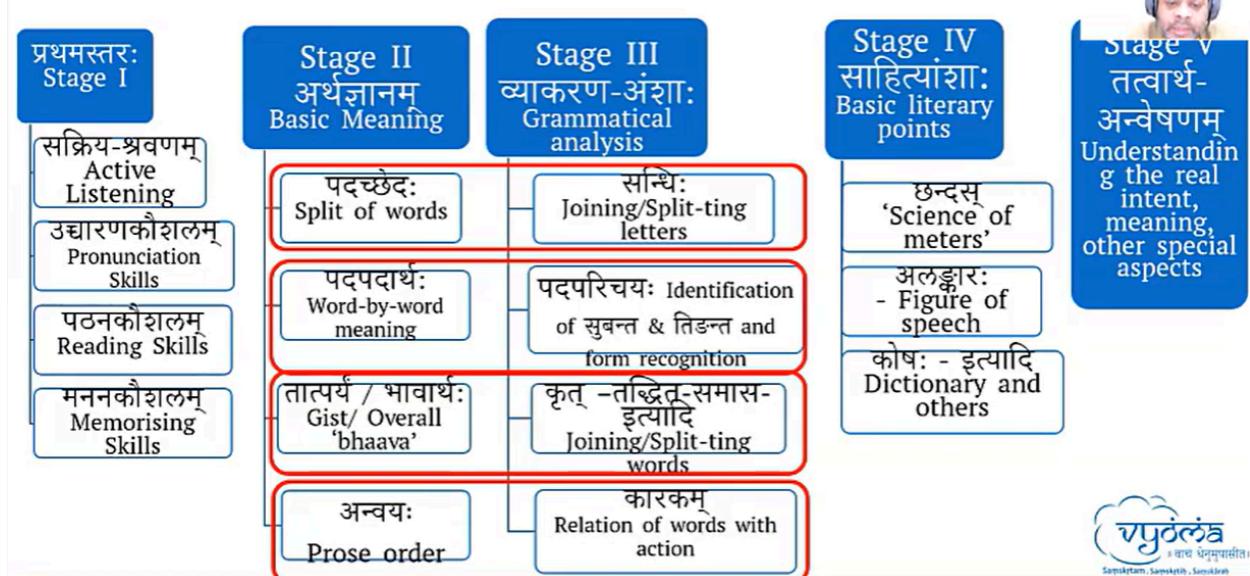
पठ + सन् = पिपठिष

सन्नतः - उदाहरणानि

- ❖ वन्दितुम् इच्छति - विवन्दिषते ❖ Desires to salute
- ❖ श्रोतुम् इच्छति - शुश्रूषते ❖ Desires to serve
- ❖ कर्तुम् इच्छति - चिकीर्षति/ते ❖ Desires to do
- ❖ चोरयितुम् इच्छति - चुचोरयिषति/ते ❖ Desires to steal

शास्त्र अभ्यास

Overall Framework of understanding a text



उदाहरण

1st shloka of SrimadValmikiRamayana

तपः स्वाध्यायनिरतं तपस्की वाग्विदां वरम् ।
नारदं परिप्रच्छ वाल्मीकिर्मुनिपुङ्ग्वम् ॥

STEP 1 - पदच्छेदः – Splitting of words

तपःस्वाध्यायनिरतं तपस्वी वाग्विदां वरम् ।

नारदं परिप्रच्छ वाल्मीकिर्मुनिपुङ्गवम् ॥

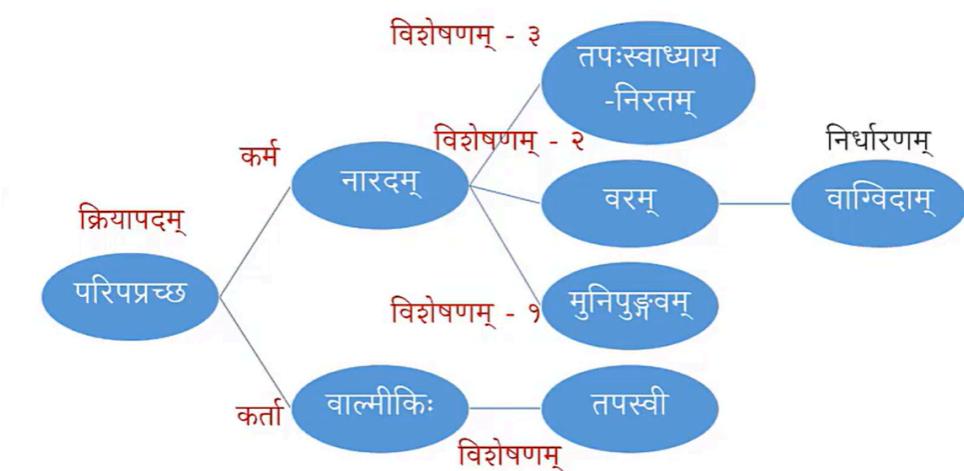
तपःस्वाध्यायनिरतम् , तपस्वी, वाग्विदाम्, वरम् ।
नारदम्, परिप्रच्छ , वाल्मीकिः, मुनिपुङ्गवम् ॥

STEP 2 - पदपरिचयः – Identification of सुबन्त & तिङ्न्त and form recognition



पदम्	विश्लेषणम्	पदम्	विश्लेषणम्
तपस्वाध्यायनिरतम्	अ. पुं. द्वि.वि. एक.	नारदम्	अ. पुं. द्वि.वि. एक.
तपस्वी	तपस्विन्. न. पुं. प्र.वि. एक.	परिप्रच्छ	परि+प्रच्छ. लिट्. प्र.पु. एक.
वाग्विदाम्	वाग्विद्. द. पुं. ष.वि. बहु	वाल्मीकिः	इ. पुं. प्र.वि. एक.
वरम्	अ. पुं. द्वि.वि. एक.	मुनिपुङ्गवम्	अ. पुं. द्वि.वि. एक.

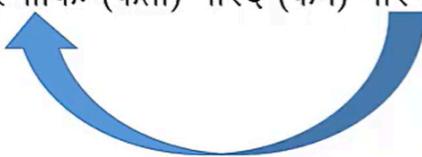
STEP 4 : MINDMAPPING of the shloka components (Relating to VERB) (कारकम्)



अन्वयः

तपस्वी वाल्मीकिः तपःस्वाध्यायनिरतं वाग्विदां वरं
मुनिपुङ्गवं नारदं परिप्रच्छ ।

कर्तरि प्रयोगे अस्ति अयं क्षेकः । तद्यथा -
वाल्मीकिः (कर्ता) नारदं (कर्म) परिप्रच्छ (क्रियापदम्)।



व्याकरणांशाः



❖ सन्धिः

- वाग्विदाम् = वाक् + विदाम् (जश्त्वम्)
- वाल्मीकिर्मुनिपुङ्गवम् = वाल्मीकिः + मुनिपुङ्गवम् (विसर्ग-रेफादेशः)

❖ कृदन्तः

- निरतम् = नि + रम् + त्त

❖ समासः

- तपस्स्वाध्यायनिरतम् = तपः च स्वाध्यायः च, तपःस्वाध्यायौ (द्वन्द्वः)
तपःस्वाध्याययोः निरतः, तम् (सप्तमीतत्पुरुषः)



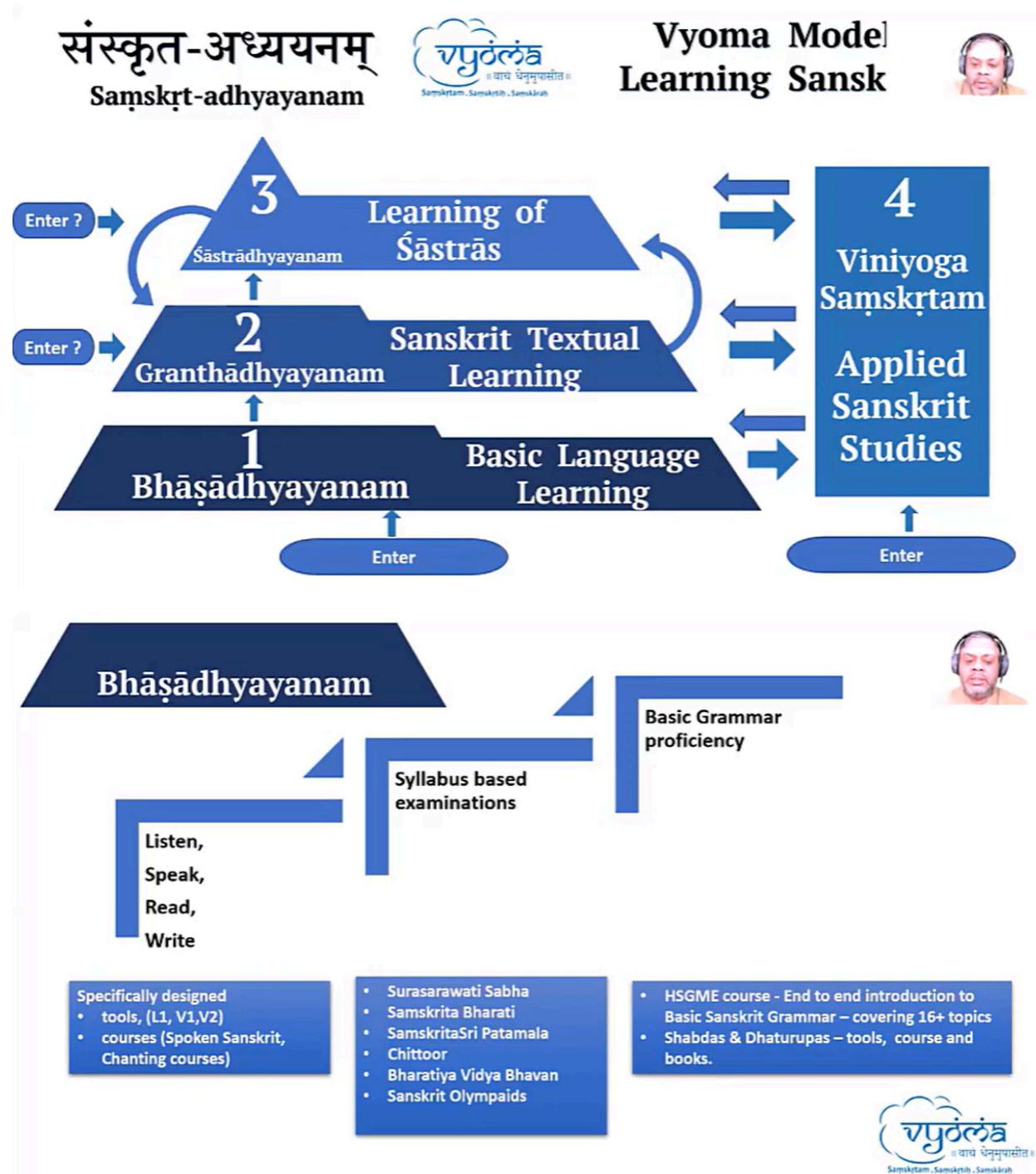
- मुनिपुङ्गवम् = पुमान् च असौ गौः च (कर्मधारयः) {पुङ्गवः श्रेष्ठः इत्यर्थः},
मुनिषु पुङ्गवः, तम् (सप्तमीतत्पुरुषः)

- वाग्विदाम् = वाचं वेत्ति इति, (वाग्विद्) तेषाम् (उपपद-तत्पुरुषः)

❖ तद्वितान्तः

- तपस्वी = तपः अस्य अस्ति इति (विनि-प्रत्ययः)

How to Study Sanskrit



Granthādhyayanam



Understanding
commentaries &
Tatwartha

Literary Analysis

Grammatical
Analysis of texts

Basic Meaning

Active Listening
Accurate
Pronunciation
Fluent reading/
parayanam
Memorising

Chanting courses
Audio tools – Teaching
mode, Parayanam
mode

Overview courses – BG
Verse by verse – BG
Subrahmanyam Bhujangam,
etc.

E.g. BG deep study course for 3 chapters
Champu Ramayanam, other kavya texts
Bhaja Govindam, etc.
Chittoor courses – Level 4,5,6
Koshadhyayanam, Chandas, etc.

Ramayanam by Prof MB
Aditya Hrudayam by VSB



Śastrādhyayanam

Illustrative steps/ texts for Vyakarana Shastra



Darshana Texts

Advanced &
Prameya texts

Pravesha &
Prakriya texts

- Ashtadhyayi sutras memorization
- LSK
- VSK
- Kashika

- Praudhamanorama
- Laghushabdendushekharā
- Paribhashendushekharā
- Bhushanasaara
- Laghumanjusha
- Mahaabhashyam, etc.

- Vaakyapadeeyam
- Mahabhaashyam



4 Vinyoga Saṃskṛtam

Applied Sanskrit Studies

- Management concepts from SundaraKandam
- Foundations of Sanathana Dharma
- Lilavati of Bhaskaracharya
- Power of Sanskrit lecture series

Grammar is at each stage: How to approach

